B.A part II
paper-III

(6)

सांस्कृतिक एवं अन्य प्रभाव

(1.) उर्दू का विकास :- मुसलमानों की प्रमुख भाषाएँ तुर्की और फारसी थी, जबकि हिन्दुओं की भाषा संस्कृत थी। दोनों की भाषा एक दूसरे की कठिनाइयाँ पैदा करती थी। हिन्दुओं के लिए तुर्की और ~~भाष~~ फारसी भाषाएँ कठिन थी और मुसलमानों के लिए संस्कृत और हिन्दी। इसलिए दोनों के प्रभावों के फलस्वरूप एक अलग भाषा उर्दू का विकास हुआ।

(2.) विभिन्न कलाओं का एक होना →

मुसलमान अपनी शैली से इमारतें बनाते थे और हिन्दू वास्तुकार अपनी शैली से, जब मुसलमानों ने भारतीय कलाकारों से इमारतें बनवायी तो उनकी इमारतों में हिन्दू शैली भी सम्मिलित हो गई और हिन्दू एवं मुस्लिम दोनों ही कलाओं की विशेषताएँ ~~मुस्लिम~~ इस प्रकार मुस्लिम इमारतों में दिखाई देने लगी। इस प्रकार चित्रकला, संगीत, नृत्य आदि कलाओं में भी हिन्दू और मुस्लिम कलाएँ ~~सम्मादित~~ सम्मिलित हो गई।